# कारक

→ कारक का शाब्दिक अर्थ → क्रिया को करने वाला
→ हिंदी में कारक के भेद → आठ (संबंध, संबोधन)

परिभाषा → संज्ञा या सर्वनाम का सही रूप जो उसका संबंध क्रिया के साथ बताता है कारक कहलाता है।

उदा०- तोता पेड़ (पर) बैठा है।
(कारक चिन्ह, परसर्ग/विभक्ति)

→ संज्ञा या सर्वनाम संबंध जो क्रिया से बताते हैं, वे परसर्ग, विभक्ति होते हैं।

| कारक | विभक्ति | लक्षण |
|---|---|---|
| कर्ता | ने | क्रिया करने वाला |
| कर्म | को | जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े |
| करण (साधन) (अंग-शंग) | साधन → से / के द्वारा | जिस साधन से क्रिया की जाए |
| संप्रदान | के लिए, के वास्ते | जिसके लिए क्रिया हो |
| अपादान | से (अलगाव) | जहाँ पर अलग होने का बोध हो |
| संबंध | का, की, के, रा, री, रे | जिससे संज्ञा या अन्य पदों से संबंध स्थापित होता है। |
| अधिकरण | में, पर (को) समय का बोध | क्रिया होने का आधार |
| संबोधन | अरे, ओ, अजी, हे | जिससे संबोधित किया जाए। |

(1) कर्ता कारक (ने) → क्रिया को करने वाला → सकर्मक भूतकाल

उदा० - राम ने पत्र लिखा।
सीमा ने खाना खाया।
मोहन सो रहा है।
पिता जी खाना खा रहे हैं।
सोहन अब पढ़ेगा।

(2) कर्म कारक (को) - क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक होता है

उदा०- → राम ने धोबी को कपड़े दिए। → हार्दिक ने भैंस को पानी पिलाया।
→ नीरज को गुरुजी ने पीटा। → टीकम ने राहुल को पुस्तक दी।
→ राम ने रावण को मारा।

(3) **करण कारक** -: (साधन) से/के द्वारा – जिससे क्रिया को करने का पता चलता है।

उदा॰ – माँ ने चाकू (से) सब्जी काटी।
→ राहुल मशीन द्वारा कपड़े धोता है।
→ ज्योति ने कलम से पत्र लिखा।
→ बच्चे बस द्वारा पाठशाला जाते हैं।
→ गोपाल साइकिल से बाजार जाता है।

(विशेष) **अंग भंग** : की स्थिति में करण कारक होता है।

उदा॰ – राम पैर से लंगड़ा है।
मोहन आँख से अंधा है।

साधन → पैर, → आँख

Ques – गोपाल कलम से कहानी लिखता है।
" वाक्य में कारक बताओ –
(A) कर्ता (B) करण ✓ (C) अपादान (D) कर्म

(4). **संप्रदान कारक** -: (के लिए, के वास्ते)
→ वाक्य का कर्ता जिसके लिए कोई कार्य करता है, वह संप्रदान कारक होता है।
→ इस कारक में कोई भी वस्तु हमेशा के लिए दी जाती है।

उदा॰ – राहुल रोशनी के लिए उपहार लाया।
श्याम माँ के लिए दवाई लाया।
राजा ने भिखारी को कपड़े दिए। (के लिए)

(5). **अपादान कारक** -: (से) इस कारक में अलगाव का बोध होता है।

उदा॰ – हिमालय से गंगा निकलती है।
राम दिल्ली से जयपुर जाता है।
पेड़ से पत्ते गिरते हैं। बिल्ली छत से कूद गई।
सीता, गीता से सुंदर है (तुलना)
सीमा साँप से डरती है (भय, डर)

(6). **संबंध कारक** -: (का, की, के, रा, री, रे) → जिस वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम वाक्य के अन्य संज्ञा, सर्वनाम से संबंध बताते हैं –

उदा॰ – मोहन के पिता जी मास्टर हैं।
राम मेरा छोटा भाई है।
मेरे मामा दिल्ली रहते हैं।
मेरा पेन नीला है।
मेरा दोस्त करोगा है।

(7). अधिकरण कारक :- (में, पर) → जिस कारक से क्रिया के आधार का पता चलता है।

उदा०- राम घर में पढ़ रहा है।
पक्षी डाल पर बैठा है।
पुस्तक मेज पर रखी है।

(8). संबोधन कारक : (हे, अरे, ओ, अरी) इस कारक का प्रयोग संबोधित करने में किया जाता है।
(!)

उदा०- हे भगवान! रक्षा करो।
अरे भाई! उधर मत जाओ।
ओ! जरा सुनो।

समय बोधक

उदा० भैया शाम को आएंगे।